22 जून, 2021 से आयोजित होने वाले ऑनलाइन भारतीय व विदेशी भाषा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर भाषण

———

- भारतीय एवं विदेशी भाषा शिक्षण के इस उद्घाटन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

- मेरा विचार था कि लोक सभा द्वारा ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ जिसमे विदेशी भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाओं का भी शिक्षण हो ताकि हमारे जनप्रतिनिधि तथा लोकतान्त्रिक संस्थाओं में कार्यरत अधिकारी अधिक सामर्थ्य और क्षमता से कार्य कर सकें।

- इसी क्रम में पिछले वर्ष अगस्त में पहली बार चार विदेशी भाषाओं के लिए शिक्षण कार्यक्रम का आरंभ किया गया था। उस समय यह कार्यक्रम मात्र सचिवालय के अधिकारियों के लिए रखा गया था।

- मुझे बताया गया है कि उस कार्यक्रम मे बहुत से अधिकारियों ने रुचि दिखाई। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रतिभागियों को शिक्षण कार्यक्रम का लाभ मिला होगा।

- इस बार भाषा शिक्षण कार्यक्रम से अधिकारियों के साथ-साथ हमारे माननीय सांसदों तथा उनके परिवारों एवं राज्यों के विधानमंडलों के सदस्यों को भी जोड़ने का प्रयास किया गया है।

- इस कार्यक्रम में फ्रांस, जर्मनी, जापान, पुर्तगाल, रूस और स्पेन के राजदूत भी हमारे साथ जुड़े हैं। मैं इन सभी महानुभावों का स्वागत करता हूँ तथा इस कार्यक्रम से जुड़ने के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

- विश्व के अन्य प्रजातान्त्रिक देशों की संसदों के साथ भारतीय संसद के अत्यन्त पुराने तथा घनिष्ठ संबंध रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के कार्यक्रम से हमारे संबंध और अधिक प्रगाढ़ होंगे।

- भाषाएँ हमें एक दूसरे से जोड़ने का काम करती हैं। किसी भी भाषा के ऊपर हमारी जितनी गहरी पकड़ होगी, उतनी ही स्पष्टता से हम अपनी बात, अपने विचार एवं भाव दूसरों तक पहुंचा पायेंगे।

- हमारा देश संस्कृति और भाषा के स्तर पर विविधताओं से भरा हुआ देश है। हमारे देश की समृद्ध संस्कृति हमारी बहुरंगी भाषाओं में भी स्पष्ट दिखाई देती है। जब संसद का सत्र चल रहा होता है तो सदन में भी भाषाओं की विविधता दिखती है।

- हमारा प्रयास होना चाहिये कि हमें अपनी मातृभाषा के साथ साथ कम से कम एक और भारतीय भाषा का ज्ञान हो।

- इससे न सिर्फ राष्ट्रीय एकता की भावना सशक्त होगी बल्कि हम विधायिका का कार्य भी अधिक सक्षमता से कर पाएंगे। इससे हमारी लोकतान्त्रिक संस्था और लोकतान्त्रिक व्यवस्था दोनों ही सशक्त होंगे।

- संसद की कार्यवाही में आम तौर पर सभी भारतीय भाषाओं का प्रयोग होता है। विधायिका में कार्य कर रहे अधिकारियों को दैनिक रूप से माननीय सदस्यों के लिए कार्य करना होता है।

- इसलिए यदि सचिवालय के अधिकारियों को उनकी भाषा का ज्ञान हो तो उनकी कार्यकुशलता और गुणवत्ता बढ़ेगी तथा वे अपना काम बेहतर तरीके से करते हुए माननीय सांसदों को पूरी संतुष्टि दे पाएंगे।

- यदि हमें विदेशी भाषाओं की भी जानकारी हो तो इससे हमें अपने कार्य को प्रभावी रूप से करने में सहायता मिलती है।

- किसी भी विदेशी अथवा क्षेत्रीय भाषा को सीखने से हम उन भाषाओं की संस्कृति और वहाँ के व्यक्तियों से जुड़ जाते हैं, जिससे हमारे बीच एक आत्मीय संबंध बन जाता है।

- आज जब विश्व में वर्चुअल माध्यम से राष्ट्रों के बीच परस्पर संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान किया जा रहा है तो एक दूसरे की भाषा की समझ होना आवश्यक है।

- मेरा मानना है कि संसदीय Diplomacy को सशक्त बनाने और संसदीय सम्मेलनों और कार्यक्रमों में विचारों के आदान-प्रदान तथा मैत्री सम्बन्ध को घनिष्ठ बनाने के लिए विदेशी भाषाओं की बुनियादी जानकारी होना आवश्यक है।

- जिस प्रकार से हमारी संसद ने विदेशी भाषाओं को सीखने को प्राथमिकता दी है, मेरी आशा है कि उसी प्रकार विदेशी संसदें भी हमारी भाषाओं को सीखने का प्रयास करेंगी।

- एक दूसरे की भाषाओं का ज्ञान परस्पर चर्चा और संवाद को बेहतर बनाता है।

- इस भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से विधायिका के कर्मचारियों के कौशल में वृद्धि लाने का प्रयास किया जा रहा है। हमारा प्रयास रहेगा कि हम भविष्य में इस कार्यक्रम में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ-साथ और अधिक विदेशी भाषाओं का भी प्रशिक्षण दें।

- मैं यहां उपस्थित माननीय राजदूतों को यह भी बताना चाहूंगा कि हमारे नए संसद भवन का कार्य प्रगति पर है। यह भवन 21वीं सदी के भारत की आशाओं एवं आकांक्षाओं का प्रतीक होगा।

- इस भवन में माननीय सांसदगण अपना कार्य पूरी क्षमता से कर पाएं, इसके लिए सारी व्यवस्थाएं की गयी हैं। इसमें सभी भारतीय भाषाओं में interpretation की सुविधा रहेगी, ताकि सभी क्षेत्र के सांसदगण सभा की कार्यवाही में बिना किसी असुविधा के भाग ले सकें।

- अंत में मैं इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए एक बार फिर आप सभी का धन्यवाद करता हूं। मैं इस कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए प्राइड को बधाई देता हूं और इस कार्यक्रम की सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद।